भूमिका

मै जब एम. ए. में थी उसी वक्त मैंने बहुत से उपन्यास पढे। मुझे पहले से ही उपन्यास पढने में रुचि थी क्योंकि जब मै बी. ए. में पढ रही थी उस समय हमारे पाठयक्रम में उषा प्रियंवदाजी का ` रुकोगी नही ... राधिका ? उपन्यास था। वह मुझे इतना अच्छा लगा कि मैंने उषाजी के और दूसरे उपन्यास पढे जैसे ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` ` शेषायात्रा `। लेकिन जब मैंने` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास पढा उसी समय से उसकी नायिका` सुषमा` मेरे मन-मस्तिष्क में छायी रही क्योंकि वह अपने परिवार के लिए अपना सब कुछ त्याग कर देती है इसलिए उसके व्यक्तित्व से प्रभावित मेरी चेतना को इस बात का पता भी न चला कि, सुषमा के माध्यम से प्रियंवदाजी ने कब मेरे हृदय में स्थान ग्रहण कर लिया है। तभी से ही मैंने निश्चय किया कि जब मै एम. फिल करुंगी तो उषाजी के कथात्मक साहित्यपर ही करुंगी और योगायोग की बात है कि मुझे एम. फिल में प्रवेश भी मिल गया। उसी समय शोध-प्रबन्ध के लिए विषय निर्वाचन का सवाल उठा तो मैंने सोचा कि अपना सपना तो सचमुच ही सच्चा हो रहा है और इसमें भी और एक बात सौभाग्य की ,कि उसी ही समय` उषा प्रियंवदाजी ` के` पचपन खम्भे लाल दीवारें `उपन्यास पर टी. व्ही. सिरियल शुरु हो गयी और उसने मेरे दिलो दिमाग पर असर किया। मैंने अपनी इस इच्छा को मेरे सरजी के सामने रखा तो उन्हें भी यह विषय पसंद आया उसके बाद जब मैं मेरी शोध मार्गदर्शिका डॉ. शशिप्रभा जैन जी को बताया तब उन्होंने भी इस विषय को सहर्ष स्वीकृति दे दी।

इस विषय चयन का एक और भी महत्वपूर्ण कारण यह भी है, कि प्रियंवदाजी के समूचे साहित्य को पढने के पश्चात मुझे यह ज्ञात हुआ कि उषा प्रियंवदाजी ने सचमुच ही संयुक्त परिवार को भोगा है क्योंकि उनके` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में मध्यवर्गीय संयुक्त परिवार में भारतीय नारी ` सुषमा` का

चित्रण किया गया है। वह सामाजिक एवं पारिवारिक विषमता के कारण प्रेम नहीं कर पाती। घर की, परिवार की आर्थिक विवशताओं से जन्मी मानसिक यंत्रणा का चित्रण बडा मार्मिक रूप में उषा प्रियंवदाजी ने किया है।

`पचपन खम्भे लाल दीवारें` उपन्यास में मध्यवर्गीय परिवार में धन के कमी के कारण उत्पन्न संघर्ष, विवाह की समस्या आदि को उषा प्रियंवदाजी ने बहुत ही सुन्दर ढंग से चित्रित किया है।

शोधकार्य करते समय मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न उपस्थित हो रहे थे।

(१) `पचपन खम्भे लाल दीवारें` उपन्यास को यही शीर्षक क्यों ?

(२) `सुषमा इतनी पढी लिखी घर से बाहर निकलकर अकेली रहकर, नौकरी कर रही है फिर भी वह अपने जीवन के बारे में उचित निर्णय न ले पायी क्या उपन्यास का ऐसा अंत ठीक है ?

(३) क्या आज की शिक्षित युवतियाँ भी सुषमा की तरह ही घुट-घुट कर जीना पसंद करेगी ?

इन सभी प्रश्नों का उत्तर मैंने उपसंहार में दिया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का अध्ययन करते समय सुविधा की दृष्टि से इसे पाँच अध्याय में विभाजित किया है।

मेरे प्रथम अध्याय का शीर्षक `उषा प्रियंवदाजी का संक्षिप्त जीवन परिचय। यह परिचय दिखाते समय उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला है। इसमें उषा प्रियंवदाजी साहित्य सृजन के मार्ग पर किस प्रकार अग्रसर हुई इसका विस्तार से उल्लेख किया है साथ ही साथ उनके कथात्मक साहित्य का भी संक्षिप्त परिचय दिया है।

मेरे द्वितीय अध्याय का शीर्षक `परिवार से तात्पर्य` इस सन्दर्भ में मैंने परिवार का स्वरुप, परिवार का विश्लेषण करते हुए प्राचीन तथा आधुनिक मनीषियों के विचारों के प्रकाश में परिवार शब्द की व्युत्पत्ति, परिवार विषयक परिभाषाएँ, भारतीय परिवारों के और पाश्चात्य परिवारों के सन्दर्भ में विविध

रुप परिवार का महत्व, परिवार के प्रकार आदि पर विस्तार से चर्चा की है। प्रस्तुत अध्याय मूलत: समाजशास्त्रीय अध्ययन की आधारशिला पर आधारित है इसलिए परिवार विषायक सैध्दान्तिक अभिमत प्रस्तुत किये है।

मेरे तृतीय अध्याय का शीर्षक ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास का संक्षिप्त परिचय है। प्रस्तुत अध्याय में उपन्यास का संक्षिप्त कथानक बताते हुए उसका समीक्षात्मक विवेचन किया है।

मेरे चतुर्थ अध्याय का शीर्षक ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में चित्रित परिवार का स्वरुप ` इसमें सबसे पहले ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में परिवार का स्वरुप,उस परिवार के विभिन्न प्रकार जैसे संयुक्त परिवार और विभक्त परिवार आदि पर प्रकाश डाला है। जिसके अंतर्गत विवाह करके पति-पत्नी का अपना परिवार बनता है इसलिए विवाह का विश्लेषाण उदाहरण सहित किया है। उससे दाम्पत्य जीवन उसमें सफल दाम्पत्य जीवन,असफल दाम्पत्य जीवन,उसके साथ ही साथ दाम्पत्येत्तर पारस्पारिक संबंध उसमें परिवार में अन्य विभिन्न पारिवारिक सम्बन्ध जैसे प्रस्तुत ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास के परिवार में माता-पिता,संतान,भाई-बहन,सास-बहू,ननंद-भाभी ,देवर आदियों का उल्लेख किया है।

मेरे पंचम अध्याय का शीर्षक ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में चित्रित विभिन्न पारिवारिक समस्या है। जिसमें विशेषा रुप से विवाह पूर्व की समस्या,वैवाहिक समस्या, नौकरी पेशा नारी की समस्या, अजनबीपन की समस्या, बेरोजगारी की समस्या,उच्चशिक्षित नारियों की समस्या,मनोवैज्ञानिक समस्या,दहेज की समस्या, नारी की नारी के प्रति सहानुभूति का ना होना एक समस्या,आर्थिक समस्या,पारिवारिक समस्या तथा नैतिकता की समस्या आदि समस्याओं को चित्रित किया है।

अंत में उपसंहार है जो समूचे शोध-प्रबन्ध का सार है।

शिवाजी विश्वविद्यालय ,कोल्हापुर के हिन्दी विभाग की, एम.फिल. छात्रा होने के नाते प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध को पेश करते हुए मुझे अत्यधिक खुशी हो रही है। इसका संपूर्ण श्रेय मैं सर्व प्रथम मेरे गुरु डॉ.श्रीमती शशिप्रभा जैन जी को देती हूँ। उनसे प्राप्त स्नेह और मार्गदर्शन के प्रति मैं सदैव उनकी ऋणी रहूँगी।

साथ ही शिवाजी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के आदरणीय श्री मेारे सरजी,चव्हाण सरजी,तिवले सरजी तथा कमला महाविद्यालय की श्रीमती भारती शेळके आदि ने मुझे समय समय पर जो प्रेरणा और उत्साह देते रहे है मैं इसलिए उनकी ऋणी रहूँगी।

मेरे परमपूज्य माता-पिता,भाई-भाभी,बहन जिन्होंने खुद कष्ट उठाकर मेरे इस लघु शोध-प्रबन्ध को साकार रुप देने में जी जान से साहयता की है उनका आभार किन शब्दों से मानू समझ नहीं आता ...

अंत में टंकलेखक श्री बाळकृष्ण रा.सावंत,कोल्हापुर, उनके प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने इस शोध प्रबन्ध को अंतिम रुप देने में मेरी साहयता की।

शोध छात्रा Bhosale

कु.सुनिता शिवाजीराव भोसले,

स्थल: कोल्हापुर।

दिनांक :२४:६:१९९४।

••